2. भारत के हनुमान

कार्य स्थल पर भारतीयों की क्षमता ने मुझे हमेशाआश्चर्य चकित किया है। पहला आश्चर्य तब आया जब लगभग 3 दशक पहले प्रयोगात्मक आधार पर हमारे कार्यालय में कंप्यूटर लगा था। एक सहायक ने कंप्यूटर से एक दिन में 25 पृष्ठ टाइप कर दिया था जब सहायक टाइप लेखक एक दिन में पांच से छः पृष्ठों तक ही टाइप कर रहे थे। मैंने सोचा कि यह शायद एक अपवाद और व्यक्तिगत उत्कृष्टता का उदाहरण है।

लेकिन जब मैंने एक भारतीय प्रबंधन संस्थान में पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम (पीजीपी) में प्रवेश 35 से 105 तक बढ़ाया, तो गैर-शिक्षण कर्मचारी संख्या पहले की तरह ही रही, जबकि प्रत्येक विभाग और अनुभाग (डुप्लिकेट रूम से छात्र मामलों के कार्यालय और प्लेसमेंट कार्यालय, पीजीपी कार्यालय, पुस्तकालय और यहां तक कि खातों के कार्यालय में भी) में काम का बोझ तीन गुना बढ़ गया था । शिक्षण पक्ष में, नियमित संकाय सदस्यों की संख्या 22 से 24 तक ही बढ़ी (पहले साल में यह वास्तव में 22 से 20 तक नीचे आ गई थी)।

लेकिन यह उदाहरण भी उनकी क्षमता को समझने के लिए पर्याप्त नहीं है, जब मैं भारतीय प्रबंध संस्थान, कोझीकोड में पहुंचा, मुझे पता चला कि जब पीजीपी छात्रों की संख्या 60 थी, तब वहां 30 गैर-शिक्षण कर्मचारी थे। यही संख्या तब भी बनी रही जब भी भर्ती हुए छात्रों की संख्या 120 से बढ़कर 180 हो गई और 260 भी हो गई। इस प्रकार मुझे अनुभव हुआ कि 30 गैर-शिक्षण स्टाफ की शक्ति पीजीपी में 60 से 120 से -180 से 260 की बढ़ोतरी तक संभाल सकती है।

यही अनुभव नियमित संकाय सदस्यों के साथ भी रहा। संकाय सदस्यों की संख्या 20 थी जब 60 छात्र थे। जब छात्रों की प्रवेश संख्या 120 तो नियमित संकाय संख्या 24 तक बढ़ी। यह संख्या उतनी ही बनी रही जब छात्रों की प्रवेश संख्या 180 तक पहुंच गई (वास्तव में यह पहले वर्ष में 17 हो गई थी)। जब छात्रों की संख्या 260 तो केवल २८ नियमित संकाय सदस्य ही थे।

इसके अलावा यही संकाय संख्या सामान्य प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी) और कई सम्मेलन आयोजित करने के साथ साथ ऑनलाइन कार्यक्रमों के 240 प्रतिभागियों का भार और 10 के करीब सप्ताह लंबे संकाय विकास कार्यक्रम (दोनों में संस्थान शीर्ष स्थान पर) का भार उठती थी। किस स्तर पर उनका उपयोग पूरी तरह से हो रहा था, मुझे नहीं पता।

लेकिन इससे मैं निष्कर्ष निकल सकता हूँ निकालता हूं कि भारतीय कार्य करने की महान क्षमता से परिपूर्ण हैं महान हैं। हम संभवतः उनके क्षमता अनुसार चुनौतीभरा लक्ष्य नहीं रख पाते हैं।

क्या वे हनुमान के समान हैं, परिणाम देने की उनकी महान क्षमता के साथ, लेकिन एक अभिशाप के कारण वह किसी अन्य द्वारा याद दिलाने तक अपनी क्षमता को भूले रहते हैं? क्या हम कभी भी अपनी क्षमता का पूरी तरह उपयोग कर सकते हैं? मेरे लिए, यह एक नेतृत्व और मानव संसाधन विकास पहेली और चुनौती बनी हुई है।